3 कबधौं मिलै मोहि श्रीगुरु मुनिवर...

कबधौं मिलै मोहि श्रीगुरु मुनिवर,
करि हैं भवोदधि पारा हो ।।टेक.।।

भोग उदास जोग जिन लीनों, छाँडि परिग्रह भारा हो।
इन्द्रिय दमन वमन मद कीनो, विषय कषाय निवारा हो ।।१।।
कबधौं...

कंचन काँच बराबर जिनके, निंदक बंदक सारा हो।
दुर्धर तप तपि सम्यक निज घर, मनवचतन कर धारा हो ।।२।।
कबधौं...

ग्रीष्म गिरि हिम सरिता तीरै, पावस तरुतल ठारा हो।
करुणाभीन चीन त्रसथावर, ईर्यापंथ समारा हो ।।३।।
कबधौं...

मार मार व्रत धार शील दृढ,मोह महामल टारा हो।
मास छास उपास वास वन, प्रासुक करत अहारा हो ।।४।।
कबधौं...

आरत रौद्र लेश नहिं जिनके,धर्म शुकल चित धारा हो।
ध्यानारूढ़ गूढ़ निज आतम,शुद्ध उपयोग विचारा हो ।।५।।
कबधौं...

आप तरहिं औरन को तारहिं,भवजलसिंधु अपारा हो।
'दौलत' ऐसे जैन–जतिन को,नित प्रति धोक हमारा हो ।।६।।
कबधौं.।

अहो ! संसार सागर से पार लगाने वाले दिगम्बर मुनिराजों के दर्शन मुझे कब होंगे ।

जिन मुनिराजों ने पंचेन्द्रिय के विषयभोगों से विरक्त होकर होकर योग धारण किया और समस्त प्रकार के परिग्रह के भार का त्याग कर दिया है। तथा जिन्होंने इन्द्रियों के दमन द्वारा अर्थात उनको वश में करके मदरूपी कषाय का वमन कर दिया है । तथा सभी विषय कषायों को नष्ट किया है - ऐसे मुनिराज के दर्शन कब होंगे ?

जिनके लिये स्वर्ण और काँच अर्थात् अनुकूलता और प्रतिकूलता में कोई अन्तर नहीं है, निंदा करने वाले और प्रशंसा करने वाले दोनों समान हैं, जो मन-वचन-काय की एकाग्रता से कठिन सम्यक तप करके अपने निज घर अर्थात् आत्मा में लीन हो गये हैं - ऐसे मुनिराज के दर्शन कब होंगे ?

जो ग्रीष्म ऋतु में पर्वत के शिखर पर, शीत ऋतु में नदी के किनारे और वर्षा के मौसम में वृक्षों के नीचे विराजमान होकर तप करते हैं। जो दयालु होकर त्रस और स्थावर जीवों को अच्छी तरह देखकर ईर्यापथ से समिति पूर्वक गमन करते हैं - ऐसे मुनिराज के दर्शन कब होंगे ?

जो काम को पराजित करके दृढ़ शील व्रत का पालन करते हैं और जिन्होंने मोह रूपी मैल का प्रक्षाल किया है, जो छः-छः महीने तक उपवास करते हुये जंगल में रहते हैं और तद्दुपरांत प्रासुक आहार ही ग्रहण करते हैं - ऐसे मुनिराज के दर्शन कब होंगे ?

जिनके किंचित मात्र भी आर्त-रौद्रमय परिणाम नहीं है, तथा जिन्होंने धर्म ध्यान और शुक्ल ध्यान को चित्त में धारण किया है, जो अपनी आत्मा के ध्यान में ही अर्न्तलीन हुये हैं और शुद्ध उपयोग में ही सदा विचरण करते हैं - ऐसे मुनिराज के दर्शन कब होंगे ?

जो स्वयं तो संसार से पार होंगे ही और अन्य संसारीजनों को भी अपार भवसागर से पार कराने में निमित्त हैं, अतः दौलतरामजी यहां कहते हैं कि ऐसे जैन साधुओं को यतियों को निरन्तर हमारा नमस्कार हो।